हिन्दी

फागुन के माह की
थी सामान्य भोर,
नित्य कर्म के पश्चात
चले संस्थान की ओर ।

राह में पाई हमें
एक अद्भुत नारी,
अवस्था उसकी देख कर
हुआ हृदय भारी ।

जीर्ण शीर्ण थे वस्त्र उसके ,
माथे पर लाल बिन्दी,
अति उत्तम देह काया वाली
नाम अंकित था हिन्दी ।

ज्यों ही देखा उसे
पाया एक अजब आर्कषण,
तुरन्त हमने कर लिया
उससे वार्तालाप का प्रण ।

हमने पूछा,
देवी! क्यों है आपकी
अवस्था अति दुर्बल,
प्रभु कृपा होने पर भी
क्यों है आपके नेत्र सजल ?

वह बोली!
अपनी ये हृदय विदीर्ण व्यथा
किसे वाचूँ ?
घूम रही हूँ होठों पर मुस्कान लिए
लेकिन दिल में ऑसू ।

आज के इस युग में
मैं लोगों को नहीं भाती,
इसीलिए हमारी अपनी भाषा
विलुप्त होती जाती ।

तब से हमने सोच लिया
साहित्य सृजन का प्रयत्न करेंगे,
जितना भी हो पायेगा
उतना नुकसान भरेंगे ।